माड़ की लोककथा

सारस और सियार

पुनर्लेखन: प्रभात
चित्र: मयूख घोष

एकलव्य

Big Little Book Award
Winning Author

प्रभात

राजस्थान के करौली ज़िले के रायसना में जन्म। शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता, नाटक की 30 किताबें प्रकाशित। बज्जिका, छत्तीसगढ़ी, बैगा, अवधी, कुड़ुक, धावड़ी, भीली, बघेली आदि लोक भाषाओं में बच्चों के लिए लगभग 40 किताबों का सम्पादन-पुनर्लेखन। युवा कविता समय सम्मान, 2012; सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार, 2010 और बिग लिटिल बुक अवार्ड, 2019।

मयूख घोष

कोलकाता में रहने वाले मयूख घोष को यात्रा करने का शौक है। इस दौरान उनकी स्केच बुक हमेशा साथ होती है। महाराजा सायाजी राव यूनिवर्सिटी से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातक हैं। रियाज़ एकेडमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। एकलव्य, रूम टू रीड, एनसीईआरटी, कराडी टेल्स और मनन बुक्स जैसे प्रकाशकों के साथ काम कर रहे हैं।

सारस और सियार

पुनर्लेखन: प्रभात
चित्र: मयूख घोष

एकलव्य

सारस और सियार की मुलाकात कुछ-कुछ दोस्ती में बदल गई थी। इतनी दोस्ती में कि इन दिनों दोनों एक-दूसरे को अपना घर और ज़मीन-जायदाद दिखाने में लगे थे। भले ही दोनों की दोस्ती बढ़ रही थी, पर दोनों के मिज़ाज में बहुत फर्क था, बहुत-बहुत फर्क।

सियार ने सारस को विशाल गुफा दिखाई। वह गुफा शेर की थी लेकिन सियार ने अपनी बताई।

"ऐसी गुफा तो किसी शेर के पास भी न होगी।" सारस ने आश्चर्य से कहा।

“हो सकता है।” इतना कहकर सियार चुप हो गया। मगर उसने अपनी हेकड़ी जारी रखी... “यह देखो झील। यह हमारा छोटा-सा स्नानघर है। मेरा निजी है। कोई और यहाँ नहीं नहा सकता।”

उधर पहाड़ी से बहता एक झरना दिखाते हुए बोला, “ये मेरे परिवार के लिए पीने के पानी की निजी व्यवस्था है। किसी के भी यहाँ पानी पीने के लिए आने पर सख्त प्रतिबन्ध है। कोई चौराहे का हैण्डपम्प थोड़े ही है।” यह कहते हुए वह एक बेजान हँसी हँसा।

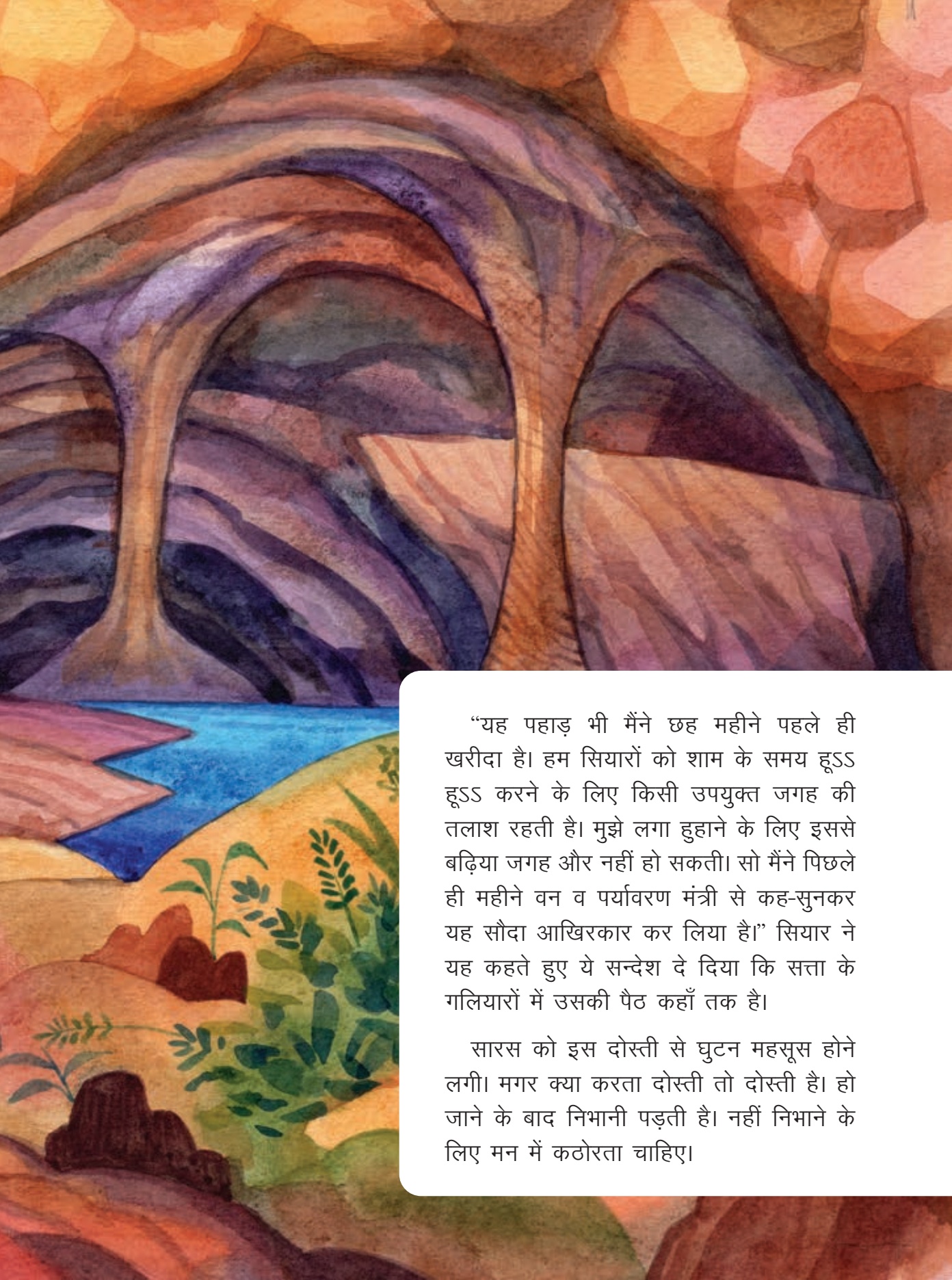

“यह पहाड़ भी मैंने छह महीने पहले ही खरीदा है। हम सियारों को शाम के समय हूऽऽ हूऽऽ करने के लिए किसी उपयुक्त जगह की तलाश रहती है। मुझे लगा हुहाने के लिए इससे बढ़िया जगह और नहीं हो सकती। सो मैंने पिछले ही महीने वन व पर्यावरण मंत्री से कह-सुनकर यह सौदा आखिरकार कर लिया है।” सियार ने यह कहते हुए ये सन्देश दे दिया कि सत्ता के गलियारों में उसकी पैठ कहाँ तक है।

सारस को इस दोस्ती से घुटन महसूस होने लगी। मगर क्या करता दोस्ती तो दोस्ती है। हो जाने के बाद निभानी पड़ती है। नहीं निभाने के लिए मन में कठोरता चाहिए।

"तुम समझ सकते हो कि शाम के समय हुहाने के लिए मुझे साधारण सियारों की तरह खेत, मैदान, बाड़ी जैसी मामूली जगहों पर निर्भर रहने की अब कोई ज़रूरत नहीं।" सियार के एक-एक शब्द में दम्भ बोल रहा था। उसकी पूरी बातचीत में शब्द कुछ भी हो आवाज़ घमण्ड की ही सुनाई देती थी। उसकी बातें सुन-सुनकर सारस के कान पक गए। वह थोड़ा सहम गया। असल बात तो यह है कि वह डर गया, इस दोस्ती के इतना बढ़ जाने से।

झूठ और दम्भ का अपना विशाल साम्राज्य दिखाने के बाद सियार ने सारस से कहा, "अब तुम्हारा इलाका देख लिया जाए। देखते हैं तुम्हारे पास क्या है?"

"जी, ज़रूर। चलिए।" सारस ने डैने फैलाकर आकाश में उड़ने की तैयारी करते हुए कहा।

"खड़े ही रहोगे कि सरकोगे भी।" सियार ने अभी-अभी दिखाई अपनी सम्पत्ति से उपजे दम्भ के भाव से कहा।

"सरकूँगा नहीं उड़ूँगा। मेरा इलाका आकाश में है, वहाँ चलने के लिए आपकी कोई निजी तैयारी है कि मैं कुछ मदद करूँ।" सारस ने कहा।

"उड़ना? यह क्या होता है। ऐसे किसी सामान का तो मेरी सात पुश्तों में कभी ज़िक्र नहीं आया। पर तुम बताओ, मैं अभी खरीद लेता हूँ।" सियार ने कहा।

सारस समझ गया कि समस्या कहाँ है। उसने कहा, "आप मेरे पैर पकड़ लीजिए। मैं उड़ान भरते हुए ऊपर की ओर उठूँगा। आप भी मेरे साथ रहोगे। ठीक है।"

"ठीक है।" सियार ने कहा।

सारस ने उड़ान भरी। कुछ ही पलों में सारस के पैर पकड़े हुए सियार आसमान में था। “यही मेरा इलाका है।” सारस ने कहा।

लाल-सफेद-काले बादलों की जादुई रंगों से भरी असीम जगह को देखकर सियार के दिमाग को 440 वोल्टेज का झटका लगा। बोला, “इसका तो कहीं कोई ओर-छोर ही पता नहीं चल रहा है। तुमने अपनी जगह की सीमा नहीं खींच रखी है क्या?”

“नहीं। कोई सीमा नहीं हैं। सारा आकाश पक्षियों का है, तारों का है, बादलों का है, धरती और दूसरे ग्रहों का है, आकाशगंगा का है, सबका है। जिसमें जहाँ तक रहने, आने-जाने की कूवत होती है, रहता है, आता-जाता है।”

“बादलों, तारों, ग्रहों, आकाशगंगाओं को छोड़ो, तुम तो तुम्हारा हिस्सा किधर-किधर है वो दिखाओ। सबका हिस्सा क्यों दिखाते हो?” सियार ने अपनी उसी संकीर्ण सोच से उपजी बात कही।

"मेरा हिस्सा कहीं नहीं है। यहाँ हिस्सों के लिए कोई जगह नहीं है। हिस्से हैं ही नहीं। यहाँ पूरा का पूरा सबका है।" सारस अब उसे और कैसे समझाता।

"मतलब ये तुम्हारा नहीं है?" सियार ने कहा।

"कहा न सबका है। अब जैसे तुम आ गए तो तुम्हारा भी है।"

"अच्छा, मेरा भी है। यहाँ आने भर से जगह अपनी हो जाती है। तो मैं अपनी जगह की तारबन्दी कर लेता हूँ। कितनी देर और तुम्हारा यहाँ उड़ते रहने का इरादा है।" सियार का लालच समन्दर की लहरों की तरह ठाठें मारने लगा।

"फिक्र मत करो। जब तक तुम चाहो, मैं यहीं हूँ।" सारस ने कहा।

"फिर ठीक है।" यह कहते हुए सियार ने वहाँ एक घेरा खींच देने के इरादे से सारस के पैर छोड़ दिए और तैरने लगा, लेकिन सीधे नीचे की ओर। और तालाब के कीचड़ में जाकर गिरा।

दूर खड़ा एक चरवाहा देख रहा था कि एक सियार कीचड़ में फँस गया है। निकलना चाहता है पर निकल नहीं पा रहा है। उसने आकर सियार की पूँछ पकड़कर उसे बाहर निकाल दिया।

मुसीबत से बाहर आते ही सियार का फिर वही दिमाग। चरवाहे से बोला, “मैं तो अपने बाप-दादा की दलदली ज़मीन की नापजोख कर रहा था। तुम बीच में वक्त बरबाद करने कहाँ से चले आए। लाओ हर्जाना भरो। अपनी गाय का एक बछड़ा मेरे हवाले करो।”

“जाता है कि लगाऊँ एक।” चरवाहे ने लाठी लहराते हुए कहा।

“ओह! मैं भूल जाता हूँ कि पहले कब-कब, कहाँ-कहाँ, क्या-क्या कर चुका हूँ।” ऐसा कुछ बुदबुदाते हुए सियार रिश्वतखोर सिपाहियों और अफसरों की तरह खिसियाते हुए खिसक लिया।

यह किताब हिन्दी बाल साहित्य में सुशील शुक्ल के ऐतिहासिक योगदान के लिए

– प्रभात

सारस और सियार
SARAS AUR SIYAR

पुनर्लेखन: प्रभात
चित्र: मयूख घोष
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा

कहानी: प्रभात, दिसम्बर 2019

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

© चित्र: मयूख घोष, दिसम्बर 2019

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: दिसम्बर 2019 / 3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2022 / 3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: मार्च 2024 / 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-87926-19-6
मूल्य: ₹ 40.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन +91 755 258 7551

सारस और सियार की दोस्ती बढ़ ज़रूर रही थी, पर दोनों का मिज़ाज काफी फर्क था। सियार को तो इस दोस्ती में मज़ा आ रहा था लेकिन सारस घुटन महसूस कर रहा था।

क्या यह दोस्ती बनी रहेगी?

एकलव्य

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

मूल्य: ₹ 40.00

9 789387 926196